3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

नलिनीकान्त बागची

●रविचन्द्र गुप्ता

नलिनीकान्त बागची का जन्म १८९६ में बहरामपुर (पं.बंगाल) में हुआ था।

बचपन से ही उसमें अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष की भावना जागृत हो गई थी। क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण नलिनी के सभी घर वाले नाराज थे। नलिनी अंग्रेजों की गुलामी से छुटकारा पाना चाहता था। अत: उसने गृह त्याग दिया। बिहार में क्रांतिकारी गतिविधियों का जाल फैलाने हेतु दल ने उसे बिहार भेज दिया। उसने पुलिस की आँखों में धूल झोंकने हेतु अपना पहनावा व भाषा भी बिहारी ही अपना ली। पुलिस को उस पर संदे

अत: वह असम चला गया। यहाँ उसने 'पूर्वी बंगाल और असम का भूगोल एवं विवरण' नामक पुस्तक की रचना की। इस खोज पूर्ण

पुस्तक में असम एवं बंगाल के गुप्त मार्गों का खुलासा किया गया था। यह क्रांतिवीरों के लिए बड़े महत्व की पुस्तक थी। ब्रिटिश सर

नलिनीकान्त को पकड़ने के लिए पूरी ताकत झोंक दी। वह वेश बदलता हुआ बंगाल आ गया। लेकिन असम के जंगलों में भूखा-प्यासा रहकर व जंगली कीड़ों के काटने से बीमार हो गया। पुलिस से बचने के लिए भिखारी का वेश भी धारण करना पड़ा। एक दिन कोलकाता में कल्ता बाजार की कोठरी में तारिणीप्रसन्न मजूमदार एवं नलिनीकान्त बागची को पुलिस ने घेर लिया । पुलिस से मुठभेड़ में वह घायल हो गया और पकड़ा गया। घायल एवं अर्द्धमूर्छित अवस्था में पुलिस उसके बयान लेना चाहती थी, तभी उसने पुलिस को लताड़ा 'मुझे परेशान न करो ! मुझे शांति से मरने दो।' १६ जून, १९१८ को अस्पताल में नलिन